thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 43 20 से 26 नवम्बर, 2014 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 मा. कृ.-13

आर्य जगत के मूर्धन्य, योगनिष्ठ संन्यासी
स्वामी दिव्यानन्द जी का अमृत महोत्सव

आर्य समाज के वरिष्ठ संन्यासियों तथा गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में समारोह पूर्वक सम्पन्न

वैज्ञानिक तथा आधुनिक माध्यमों से योग को जन-जन तक पहुँचाया जायेगा

– स्वामी आर्यवेश

आर्य जगत् के योगनिष्ठ तथा मूर्धन्य संन्यासी, लेखक, कवि, योग प्रशिक्षक सरल व्यक्तित्त्व के धनी स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती का अमृत महोत्सव 16 नवम्बर, 2014 को योग निकेतन, पंजाबी बाग दिल्ली में उत्साहपूर्ण वातावरण में समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की तथा संयोजन के. आ. यु. परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने किया। इस अवसर पर उनको शुभकामनायें देने के लिए आर्य जगत् के प्रभावशाली संन्यासीवृन्द, वानप्रस्थी महोदय तथा गणमान्य व्यक्ति भारी संख्या में उपस्थित हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा उड़ीसा के प्रधान तथा प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी धर्मानन्द जी, प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता तथा बंधुआ मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष स्वामी अग्निवेश जी, गुरुकुल गौतमनगर के प्रधान तथा गुरुकुलों को समर्पित स्वामी प्रणवानन्द जी, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, स्वामी विश्वानन्द जी, स्वामी धर्ममुनि जी, नशाबन्दी परिषद्, हरियाणा के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी, पूर्व गन्ना मंत्री, उ. प्र. स्वामी ओमवेश जी, स्वामी आर्येशानन्द जी, स्वामी सोम्यानन्द जी, पूर्व अध्यक्ष दिल्ली विधानसभा डॉ. योगानन्द शास्त्री, सांसद श्री प्रवेश वर्मा, श्री प्रेम प्रकाश शर्मा मंत्री तपोवन आश्रम देहरादून, आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, आर्य पुरोहित सभा, दिल्ली के प्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, श्री वेद मिगलानी, आचार्य संतराम आर्य, सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी, डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार, राव हरिश्चन्द्र आर्य-नागपुर, डॉ. जयेन्द्र आचार्य-नोएडा, आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा, आचार्य योगेन्द्र शास्त्री, स्वामी सच्चिदानन्द जी, श्री संतोष शास्त्री, श्री वीरेन्द्र योगाचार्य, माता सुषमा यति, श्रीमती विजयरानी शर्मा, श्री धर्मपाल आर्या, बहन पूनम व प्रवेश आर्या, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्ष व संयोजक, वैद्य इन्द्रदेव, बहन गायत्री मीना, कैप्टन अशोक गुलाटी, श्री रवीन्द्र मेहता, डॉ. ओम प्रकाश मान, प्रसिद्ध कवि प्रो. सारस्वत मोहन मनीषी सहित सैकड़ों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी दिव्यानन्द जी को सम्मान करते हुए डॉ. योगानन्द शास्त्री तथा शॉल ओढ़ाते हुए स्वामी आर्यवेश जी साथ में श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, श्री वेद मिगलानी व डॉ. अनिल आर्य

इस अवसर पर प्रातः 9 से 10 बजे तक डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। मुख्य यजमान के रूप में श्री दर्शन अग्निहोत्री सुशोभित हुये। ध्वजारोहण सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने किया। इससे पूर्व अत्यन्त उत्साहपूर्ण वातावरण में बैण्ड बाजे के साथ स्वामी दिव्यानन्द जी को जुलूस रूप में सभा स्थल के मंच पर लाया गया।

इस अवसर पर विभिन्न गणमान्य व्यक्तियों ने स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती को शॉल व स्मृति चिन्ह भेंट कर

शेष पृष्ठ 4 पर

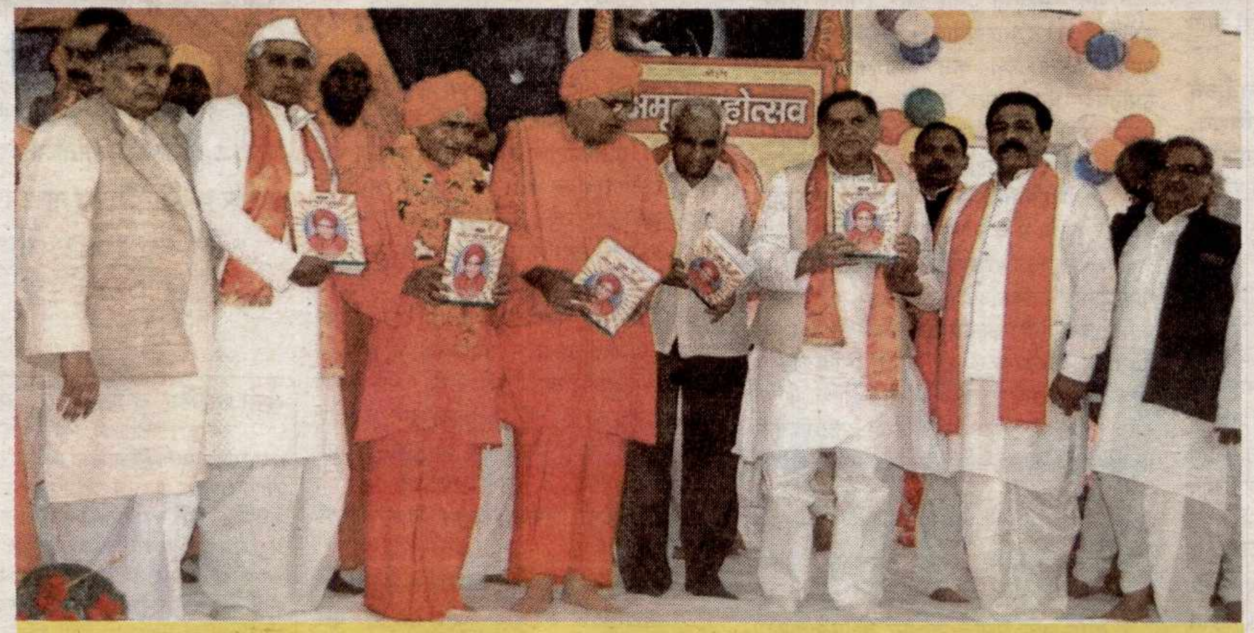

स्वामी दिव्यानन्द सम्मान समारोह में डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियान जी द्वारा सम्पादित अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन करते हुए स्वामी आर्यवेश जी, डॉ. योगानन्द शास्त्री, पं. माया प्रकाश त्यागी, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री तथा डॉ. अनिल आर्य

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

उपनिषद् ज्ञान की उत्कृष्टता

– डॉ. भवानीलाल भारतीय

भारतीय दार्शनिक तथा आध्यात्मिक चिन्तन में वेदों के पश्चात् उपनिषदों को सर्वोपरि स्थान प्राप्त है। प्राय: यह धारणा प्रचलित है कि चतुर्वेद संहिताओं में जहां नाना प्रकार के यज्ञ-यज्ञादि कर्मकाण्डों का विधान है, वहां उपनिषदों में ही आध्यात्मिक ज्ञान का सुचारू विवेचन मिलता है, प्रकारान्तर से इस विचार का प्रतिपादन करने वाले लोगों का जोर आध्यात्मिक दृष्टि से संहिता भाग की अवगणना करने पर रहता है। किन्तु इस विचार में सत्य का अंश मात्र भी नहीं है। वस्तुत: वेदों में ऐसे सैकड़ों सूक्त हैं जो परमात्मा की सर्वोच्च सत्ता का मनोज्ञ स्वरूप प्रस्तुत करते हैं तथा जीव, प्रकृति, परलोक, मोक्ष जैसे दार्शनिक तत्त्वों पर भी प्रभूत प्रकाश डालते हैं। वेदों में आये हिरण्यगर्भ सूक्त, पुरुष सूक्त, अस्मवामीय सूक्त, नासदीय सूक्त आदि वे प्रसंग हैं जिनके दार्शनिक वैभव ने अशेष चिन्तक वर्ग को आश्चर्यान्वित कर रखा है।

शंकराचार्य आदि जिन अवान्तर कालीन दार्शनिकों ने अपने सिद्धान्तों की विवचेना में मुख्यतया उपनिषदों को ही उद्धृत किया है तथा उन्हें प्रस्थानत्रयी में प्रथम स्थान दिया, वे सम्भवत: इस तथ्य को भूल गये कि स्वयं उपनिषद् ने ही यह स्पष्ट घोषित किया है कि वेदों में उस परम तत्त्व को ओ३म् कह कर घोषित किया गया है –

सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति (कठ. 2/5)

उपनिषद्कार की यह आर्ष उक्ति वैदिक अध्यात्मवाद की तार स्वर से घोषणा करती है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर ऋषि दयानन्द ने स्वरचित ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में इस तथ्य को रेखांकित किया कि प्रत्येक वेद मंत्र प्रत्यक्ष या परोक्ष रीति से ईश्वर का वर्णन करता है और अपनी इसी सुविचारित धारणा को पुष्ट करने के लिए उन्होंने वेदों में आर्य अग्नि, इन्द्र, वायु, मित्र, वरुण, विष्णु, पूषन्, बृहस्पति, मातरिखा, सुपर्ण आदि देवताओं को एक ही परमात्मा के विभिन्न नाम सिद्ध कर वैदिक एकेश्वरवाद की प्रतिष्ठापना की।

तथापि उपनिषदों के महत्त्व को भी न्यून नहीं कहा जा सकता। इन ग्रन्थों में परमात्म शक्ति, जीवात्मा तथा सृष्टि प्रपञ्च की जैसी मनोज्ञ, आह्लादकारी तथा सटीक व्याख्या की गई है वैसी संसार के किसी अन्य साहित्य में दुर्लभ है। ईशोपनिषद् के नाम से प्रसिद्ध अठारह मन्त्रों की संक्षिप्त कृति स्वल्प परिवर्तनों के साथ यजुर्वेद का चालीसवां अध्याय ही है। यजुर्वेद के 39 अध्यायों में जहाँ मनुष्य के लिए विधायक नाना कर्मों का सविस्तार उल्लेख हुआ है वहां 40वें अध्याय की परिणति ब्रह्म ज्ञान के विवेचन में हुई है। इससे यह स्पष्ट है कि सम्पूर्ण कर्मों की परिसमाप्ति ज्ञान में ही होनी चाहिए। भारतीय मनीषा में ज्ञान को जो महत्त्व मिला है उसे गीता में बहुविध व्यक्त किया गया है –

ज्ञानाग्नि: सर्वकर्माणि भस्मसातकुरुते तथा, न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते, ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति आदि उक्तियाँ इसी तथ्य को प्रकट करती हैं।

केन से लेकर श्वेताम्बर पर्यन्त 10 उपनिषदों में भी नाना शैलियों, रूपकों, वर्णन पद्धतियों, उपाख्यानों तथा उक्ति चातुर्य के साथ ब्रह्म तत्त्व की विवेचना की गई है। उपनिषदों की शैली भावात्मक, काव्य प्रधान तथा पाठक के अन्तस्तल को छने वाली है अत: आपातत: विचार करने वालों को उनके नाना संदर्भ परस्पर विरुद्ध तथा वदतोव्याधात दोष से दूषित प्रतीत होते हैं। किन्तु वास्तविकता ऐसी नहीं है। यदि समन्वयात्मक दृष्टि से इन ग्रन्थों का अध्ययन किया जाये तो वैचारिक संगति भी यहाँ मिलेगी। वस्तुत: यह खेद का प्रसंग रहा कि जब भारत के दार्शनिक जगत् मे नाना प्रवाद तथा मत प्रचलित हुए तो कथित वेदान्तवादी आचार्यों ने स्वनिरुपति सिद्धान्तों की पुष्टि में उपनिषद्, गीता तथा ब्रह्मसूत्र के स्वमतानुकूल भाष्य लिखे। फलत: अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, द्वैताद्वैत, द्वैत तथा शुद्धाद्वैत आदि पक्षों को उत्तम ग्रन्थों से पुष्ट करने वाले भाष्यों से जिज्ञासु पाठकों में बुद्धिभेद पैदा हुआ जबकि भगवान कृष्ण ने विपश्चित जनों को चेतावनी दी थी कि उन्हें जन सामान्य में बुद्धिभेद पैदा करने से विलग रहना चाहिए।

यों तो उपनिषदों के नाम से प्रचलित ग्रन्थों की संख्या शताधिक है, किन्तु ईश से लेकर श्वेताश्वतर पर्यन्त एकादश उपनिषद् ही ऋषि प्रोक्त होने से प्रमाण कोटि में आते हैं। अन्य उपनिषद् शैव, शाक्त, वैष्णव, गाणपत्य, सौर आदि विभिन्न उपासक सम्प्रदायों राम, कृष्ण, शिव, सूर्य, गणेश आदि पौराणिक देवों तथा हठयोग की साधन प्रणालियों एवं भस्म, रुद्राक्ष धारण आदि परवर्ति साम्प्रदायिक कर्मों के निरुपक होने के कारण अप्रामाणिक तथा अनार्ष हैं। किसी मनचले ने इसी प्रवृत्ति का लाभ उठाते हुए एक अल्लोपनिषद् भी लिख डाला जिसकी चर्चा महर्षि दयानन्द ने की है। यों कैवल्योपनिषद् तथा महानारायणोपनिषद् में भी अनेक सुन्दर आध्यात्मिक प्रसंग आते हैं। किन्तु इनकी प्रमाणिकता द्वितीय कोटि की ही है।

इन पंक्तियों के लेखक का उपनिषदों से परिचय आधी सदी से भी अधिक पुराना है। मैंने हाई स्कूल की परीक्षा 1945 में पास की और इसी वर्ष जसवन्त कॉलेज, जोधपुर में बी. ए. प्रथम वर्ष में प्रवेश के लिए प्रार्थनापत्र दिया। आज की भांति उन दिनों स्कूल कॉलेजों में प्रवेश पाने में विशेष कठिनाई नहीं होती थीं तथापि प्रवेशार्थियों को अंग्रेजी की एक सामान्य लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण होना पड़ता था। मैं इसमें पास तो हो गया किन्तु प्रवेश चाहने वाले छात्रों में मेरा नाम प्रतीक्षा सूची में भी चौथा था। जब तक विधिवत कॉलेज में प्रवेश न मिले, तब तक क्या करूँ, यह एक समस्या थी। यदि प्रवेश नहीं मिलेगा तो कहीं नौकरी की तलाश करनी होगी। कुछ इसी प्रकार की दुविधा मेरे सामने थी और इसी मन:स्थिति में मैंने दार्शनिक जगत् के इन मूर्धाभिषिक्त ग्रन्थों को हाथ में लिया, जो संसार के आध्यात्मिक ज्ञान के सार सर्वस्व समझे जाते हैं।

जर्मनी के प्रसिद्ध दार्शनिक शायनहार ने इनके बारे में लिखा था – "In the while world these is no study so a beneficial and so elevating as that or the upanishadh, it has been the solace of my life and it will be the solace after my death." अर्थात् संसार में उपनिषदों के अध्ययन के तुल्य लाभप्रद तथा आत्मा को उन्नत करने वाला कोई अन्य ग्रन्थ नहीं है। इनसे मुझे इस जीवन में तो शान्ति तथा प्रेरणा मिली ही है, मृत्यु के बाद भी इनकी शिक्षाएं ही मेरे लिए शान्तिदायक रहेंगी।

मैंने महात्मा नारायण स्वामी रचित उपनिषद् रहस्य (ग्रन्थमाला) को क्रमश: पढ़ना आरम्भ किया। ईश, केन, तथा कठ, इन तीन उपनिषदों का विषय विवेचन अधिक सरल लगा, प्रश्नोपनिषद् तथा ऐतरेय कुछ अधिक रहस्यावरण से ढंके प्रतीत हुए। मुण्डक का अध्ययन रोचक तथा सरल था जबकि माण्डूक्य के स्वल्पकाय ग्रन्थ का स्वारस्य जब प्रकट हुआ जब पं. गुरुदत्त विद्यार्थी की व्याख्या पढ़ी। यों गौडयादीय कारिकाओं ने इस ग्रन्थ को अधिक कठिन बनाया है। छान्दोग्य और बृहदारण्यक को पढ़ने का अवसर कुछ वर्ष बाद में मिला जब पं. शिवशंकर शर्मा काव्यातीर्थ द्वारा रचित इनके वृहद् भाष्यों का अनुशीलन किया। इन्हीं दिनों में पं. रघुनन्दन शर्मा का विख्यात ग्रन्थ वैदिक सम्पत्ति भी पढ़ा। उसमें उपनिषदों में प्रक्षेप शीर्षक प्रकरण को पढ़ने से अनेक शंकाएं भी हुई किन्तु इन ग्रन्थों के प्रति श्रद्धा तथा इनके अध्ययन में रुचि निरन्तर बढ़ती गई।

नगर आर्य समाज जोधपुर के पुस्तकालय से उपनिषदों के जो भाष्य तथा टीकाग्रन्थ मिले, उन सभी को एक-एक कर पढ़ डाला। पं. भीमसेन शर्मा, महामहोपाध्याय पं. आर्यमुनि, प्रो. राजाराम, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी सत्यानन्द, पं. देवेन्द्रनाथ शास्त्री, पं. गोपाल बी. ए., स्वामी ब्रह्ममुनि आदि प्राय: सभी आर्य विद्वानों द्वारा किये गये भाष्य और टीकाओं को पढ़ा। इसका एक बड़ा लाभ तो यह हुआ कि उपनिषदों के पाठ तथा अर्थ की बार-बार आवृत्ति हो जाने के कारण इनके विषय से तादातम्य हो गया। तथापि इनमें विवेचित सभी विषय इतने सहज, सरल तथा सुबोध भी नहीं है। विशेषत: छान्दोग्य और बृहदारण्यक में वर्णित अनेक विधाएं तथा वहाँ आये उपाख्यानों के कतिपय अंश विस्तृत विचार की अपेक्षा रखते हैं।

उपनिषदों के महत्त्व को बिना किसी देश-काल या सम्प्रदाय के भेद के, सभी देशों, मतों तथा सम्प्रदायों के मनीषियों ने स्वीकार किया है। मुगलवंश के अभागे राजकुमार युवराज दाराशिकोह ने जब उपनिषदों को पढ़ा तो वह इस दिव्य ज्ञान के सम्मोह में इतना बंधा कि उसने इसका फारसी, तर्जमा कर डाला और इसे श्रेष्ठ दर्शन कहा। यूरोपीय तथा अन्य पाश्चात्य दार्शनिकों ने भी उपनिषद्-ज्ञान की उत्कृष्टता को मुक्त कण्ठ से स्वीकार किया है। प्रो. आर्थर एन्थनी मैकडालन ने इनके बारे में लिखा –

उपनिषदों का दार्शनिक ज्ञान बहुत ऊँचा है। इनका प्रादुर्भाव सुकरात, प्लेटो और अरस्तू आदि यूनानी दार्शनिकों से शताब्दियों पूर्व हुआ था। इन दार्शनिकों के विचार उपनिषदों के अनुरूप हैं तथा उनसे उद्धृत किए हुए से प्रतीत होते हैं।

ब्रह्मसमाज के संस्थापक राजा राममोहन राय ने लिखा –

उस महानतम परमात्मा का परिपूर्ण ज्ञान, उपनिषदों में ही समग्र रीति से वर्णित है। इसे ही वेद और वेदान्त का सार-सर्वस्व कहना चाहिए। पं. ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने उपनिषदों के महत्त्व के बारे में लिखा है सम्पूर्ण संसार के पुस्तकालयों में उपनिषद सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं। वेद तो सम्पूर्ण विद्याओं और कलाओं के भण्डार हैं जो परमात्मा ने मनुष्य के हितार्थ प्रदान किये परन्तु उपनिषद् ईश्वर के एकत्व और अध्यात्म विद्या का ही प्रतिपादन करते हैं। थियोसोफिकल सोसाइटी की अध्यक्ष श्रीमती एनी बेसेन्ट ने लिखा था – उपनिषद् सम्पूर्ण जगत के साहित्य में अद्भुत तथा अद्वितीय ग्रन्थ हैं। वे ज्योतिस्तम्भ की भांति लोगों के मार्गदर्शक हैं।

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में उपनिषदों को भूरिश: उद्धत किया है। अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण में उन्होंने अपने दार्शनिक मन्तव्यों की पुष्टि में सर्वाधिक प्रमाण उपनिषदों से ही दिये हैं। आर्य समाज में उपनिषदों को प्रारम्भ से ही आदर मिलता रहा। स्वामी दयानन्द उपनिषदों की अद्वैतवादी व्याख्या से सहमत नहीं है। वे यह स्वीकार नहीं करते कि अहं ब्रह्मस्मि, तत्त्वमसि, प्रज्ञानमानन्दं ब्रह्म तथा अयमात्मा ब्रह्म जैसे उपनिषद् वाक्य जीव और ब्रह्म के अभेद के परिचायक हैं। उन्होंने इन वाक्यों को प्रसंग से पृथक कर व्याख्या करने को अनुचित कहा है तथा इनके वास्तविक अर्थ भी लिखे हैं जिनसे अद्वैत की सिद्धि नहीं होती। स्वामी दयानन्द के परवर्ती आर्य विद्वानों ने उपनिषदों के बारे में प्रभूत साहित्य लिखा है जो टीका, भाष्य तथा समीक्षा के रूप में है। पं. आर्य मुनि का दृढ़ विश्वास था कि उपनिषदों में जो दार्शनिक मत प्रकट किया गया है, उससे शाङ्कर मत की पुष्टि नहीं होती। उनका विचार निम्न दोहे में स्पष्ट हुआ है :-

उपनिषदों में है नहीं माया मत की गंध।
आद्योपान्त विचार बिन भागत करे मतिमंद॥

– 3/5 शंकर कालोनी, श्रीगंगानगर (राजस्थान)

नारी शिक्षा

– दीपक कुमार छिल्लर

शिक्षा शब्द सुनने में लगता है कम,
इस शब्द में बहुत ज्यादा है दम।
शिक्षा पाने पर लगती है यह हमें प्यारी,
अब आई है नारियों को आगे लाने की बारी।
जमाना कहता है कि यदि नारी शिक्षा पायेगी,
वह एक घर नहीं बल्कि दो घरों को शिक्षित बनायेगी।
शिक्षा ही ऐसा हथियार है जो अंधकार को भगाता है।
समाज में नारियों की सोई किस्मत को जगाता है।।1।।
जमाना बदलना है तो सोच बदलनी पड़ेगी,
इसके लिए हमें नारी को शिक्षा दिलानी पड़ेगी।
वर्तमान में शिक्षा ही एक सफल कारण है,
किरण बेदी इसका सफल उदाहरण हैं।
शुरु से ही रखो शिक्षा पर तुम ध्यान,
नारियों में बढ़ेगा शिक्षा रुपी ज्ञान।
लोग कहते हैं शिक्षा जिन्दगी बदल देती है,
मैं कहता हूँ कि नारी संसार बदल देती है।।2।।
लोगों का मानसिक स्तर कम हो चुका है,
इसीलिए नारी उत्थान कार्यक्रम रुका है।
सरकार के प्रयास को सफल बनाना होगा,
नारी शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाना होगा।
इसके लिए हम सबको सबसे आगे आना होगा,
लड़कियों को लड़कों से आगे लायेंगे हम,
इनके शिक्षा अनुपात को सुलझायेंगे हम।
अरबों की भीड़ में बस उसकी होगी पहचान,
जिसके पास होगी शिक्षा और ज्ञान।।3।।
याद है हमें महर्षि दयानन्द के वेदों का अर्थ,
शिक्षा बिना है जीवन बिल्कुल व्यर्थ।
वेदों की वाणी हमें बताती है,
नारी ही संसार को जगमग बनाती है।
नाम है दीपक मैं हूँ सबसे न्यारा,
जन-जन के मानस में फैलाना है उजियारा।
नारी शिक्षा, नारी शिक्षा यही है बस नारा,
सरकार नारी शिक्षा के लिए लाडली योजना लाई है,
इससे लोगों में जागरुकता जरूर आई है।।4।।
वर्तमान में हालात बिल्कुल बदल चुके हैं,
लोग केवल तन, मन, धन के भूखे हैं।
सुरक्षा पाने के लिए मचाना होगा शोर,
इसीलिए देना होगा नारी शिक्षा पर जोर।
लड़कियों को बड़ी अफसर बनकर दिखाना होगा,
नारी शिक्षा पर लोगों का ध्यान दिलाना होगा।
समाज में इसे समानता का अधिकार दिलाना होगा,
संसार को सुन्दर एवं सुखमय बनाना होगा।।5।।

– म. नं.-1022, ग्रामसभा कालोनी, पूठकला, दिल्ली-86
मो.:-9990422051

सैनी नर्सिंग कॉलेज में व्यक्तित्व विकास कार्यशाला

जयपुर, 15 नवम्बर, स्वास्थ्य क्षेत्र में नर्सिंग सेवा अनूठा कार्य है जिसमें सेवा सहित सम्मान जनक मानदेय व सहज मुक्ति मार्ग मिलता है। उक्त कथन जीवन प्रबन्धन एवं वैदिक प्रवक्ता यशपाल 'यश' ने जी. एल. सैनी नर्सिंग कॉलेज में व्यक्तित्व विकास कार्यशाला में व्यक्त किये। 'यश' ने सेवा के तत्वों, अनुशासित जीवन व एकाग्रता हेतु ध्यानाभ्यास टिप्स भी दिये। 'यश' ने जीवन में एश्वर्यों हेतु सही परिपक्व समय व अवस्था का महत्त्व बताया। महाविद्यालय के प्राचार्य सतीश गौतम ने अपने स्वागत भाषण में कार्यशाला की आवश्यकता बताई। अमित मीणा, सीताराम घायल, सुनील सैनी, श्रीमती रोहिना, श्रीमती अर्चना वर्मा व पुराने मैरीटोरियस छात्रों ने इस सत्र में आये नये बैच के अभ्यथियों का तिलक लगाकर स्वागत किया। कॉलेज संचालक दीपांकर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

thearyasamaj.org

सामाजिक क्रांति के शाश्वत सूत्र

– डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण

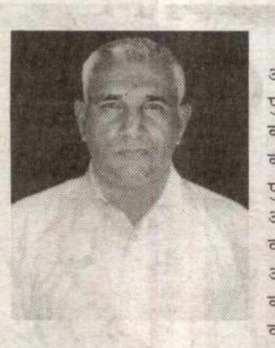

वैदिक परम्परा में मानव जीवन को चार अध्यायों में विभाजित किया गया है, जिन्हें पुरुषार्थ चतुष्टय कहते हैं अर्थात् – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। यहाँ धर्म से तात्पर्य है ईश्वर की न्यायव्यवस्था अर्थात् कर्मफल और पुनर्जन्म को दृष्टिगत रखते हुए संयम, मर्यादा, अनुशासन, धर्मानुष्ठान और ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करना। अर्थ से तात्पर्य है पवित्र आचरण और पवित्र संसाधनों से धन अर्जित कर उसका एक अंश धर्मार्थ एवं परोपकारार्थ व्यय कर राष्ट्र धर्म का पालन करना। काम से तात्पर्य है अपनी वंश बेल को इस तरह से आगे बढ़ाना कि बच्चों का पालन-पोषण, उनकी शिक्षा-दीक्षा, उनका विवाह-व्यवसाय एक आदर्श स्थापित कर सके। मोक्ष से तात्पर्य है एक ऐसा आध्यात्मिक जीवन जीना जो इहलोक के साथ-साथ परलोक को भी सुधार सके जो सात्विक और अनासक्त जीवन जीने से ही सम्भव है। यह वैदिक परम्परा करोड़ों वर्ष तक निर्बाध रूप से सतयुग, त्रेतायुग और द्वापर युग में अपनाई जाती रही जिसके बल पर भारत विश्वगुरु के गरिमामय पद पर आसीन रहा। आज से छः हजार पूर्व अर्थात् महाभारत काल से एक हजार वर्ष पूर्व राग, द्वेष, स्वार्थ, लोभ, काम, क्रोध बढ़ने से अराजकता फैलने लगी और मानव जाति शनैः-शनैः इस वैदिक परम्परा का त्याग करने लगी। हम भूलते चले गये कि हमारी सभ्यता, हमारी संस्कृति, हमारे शाश्वत जीवन मूल्य, हमारी आदर्श ज़ीवनशैली के अक्षय स्रोत वेद, वेदांग, उपनिषद्, दर्शनशास्त्र थे, ऋषि-मुनियों के उदात्त चरित्र थे, राजधर्म का पालन करने वाली व्यवस्थाएँ थीं।

पतन और पराधीनता के अनेक कालखण्डों से गुजरने के पश्चात् सन् 1947 में भारत स्वतंत्र हुआ तो यह आशा जगी कि भारत का पुनरुदय होगा, पुनरोत्थान होगा, पुनरोद्धार होगा, लेकिन स्थिति ठीक इसके विपरीत है। यह सत्य और तथ्य है कि जिस पराधीन भारत में सूई तक नहीं बनती थी अब आजाद भारत में सुपर ट्रेन, समुद्री और हवाई जहाज तथा राकेट बनाने तक की क्षमता है। किन्तु इस आर्थिक समृद्धि के बावजूद भारत की एक तिहाई से अधिक जनसंख्या गरीबी-रेखा से नीचे जीवन-यापन करने को विवश है। हमारे राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, प्रशासनिक और धार्मिक जीवन में इतने दुराग्रह, बिखराव, ठहराव, मुटाव, दरार और गह्वर हैं कि सर्वत्र अराजकता का शोषण का, अन्याय का, अभाव का, साम्राज्य स्थापित है। देश को प्रतीक्षा है एक ऐसी सामाजिक क्रांति की जिससे देश में व्याप्त साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, शोषण, पाखण्ड और नारी उत्पीड़न जैसी महामारियों का समूलतः उन्मूलन हो सके।

इन सात महामारियों की भयावता और मारक क्षमता को समझना, महसूस करना और इन्हें जड़-मूल से उखाड़ फेंकने का प्रयास करना ही आज के सामान्य जन का युग-धर्म है। यह सही है कि देश का कानून और संविधान कहीं भी इन महामारियों का पक्षधर नहीं है। कोई भी राजनीतिक दल, प्रशासन या व्यवस्था इनका खुलकर समर्थन नहीं करती। इसके बावजूद इन महामारियों का उन्मूलन नहीं, पोषण हो रहा है जो इस बात का स्पष्ट संकेत है कि हमारी सोच व सामाजिक संरचना में कहीं कुछ कमी और खोट है। पिछले दिनों अन्ना हजारे के नेतृत्व में भ्रष्टाचार उन्मूलन का राष्ट्रव्यापी आन्दोलन चला जिसमें लाखों लोगों ने शिरकत की, केन्द्रीय सरकार का अस्तित्व तक खतरे में आ पड़ा, भ्रष्टाचार को उजागर करने वाले और इस समस्या का समाधान निकालने वाले सैकड़ों लेख प्रिंट मीडिया के माध्यम से सामने आये तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर हर दिन किसी न किसी टी. वी. चैनल पर दक्ष और मेधावी लोगों की बहसें प्रसारित हुईं, जेल भरो आन्दोलन शुरू हुआ लेकिन इस आन्दोलन का अन्त किस रूप में हुआ?अन्ना टीम बिखर गई और स्वयं अन्ना नेपथ्य में जाकर गायब हो गये, सन् 2014 के संसदीय चुनाव में कहीं नज़र तक नहीं आये। इससे इसी निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि हमारी व्यवस्था ऐसे खतरनाक, अराजकतावादी, अलगाववादी, भ्रष्ट, अनैतिक तत्त्वों के हाथ में कैद हो गई है जो किसी भी सुधार को सफल होने देना नहीं चाहते। कारण, इन घातक तत्त्वों ने इन महामारियों को भुनाना और इनसे अपने निहित स्वार्थों को पूरा करने की कला विकसित कर ली है। आज सर्वत्र यही दृष्टिगोचर हो रहा है, बिगाड़ की दलदल में ही भ्रष्टाचार, अनाचार, दुराचार, कदाचार के कमल खिल रहे हैं। पुलिस वाले यही तो कहते हैं कि सदाचारी नहीं दुराचारी ही हमारे सगे हैं, उन्हीं से हमें दो पैसे की आस रहती है, सदाचारी हमें क्या देगा?

आज जितनी शक्ति, क्षमता, सामर्थ्य, ऊर्जा और निर्णायकता राजनीतिक सत्ता के पास है अन्य किसी अधिष्ठाता के पास नहीं है और सर्वसम्पन्न राजनीतिक सत्ता ने जान लिया है कि अपनी साख बचाने और बढ़ाने के लिए कैसे साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, शोषण, पाखण्ड और नारी-उत्पीड़न जैसी महामारियों का दोहन कर लाभ उठाया जा सकता है। वे इन महामारियों को अपने लिए अभिशाप नहीं वरदान समझते हैं। जाहिर है कि देश में किसी समस्या को लेकर जनता जब भी सड़क पर उतरती है तो वह सम्मानित और पुरस्कृत नहीं होती बल्कि उसे पुलिस की लाठियों की, अश्रु गैस की, पानी की बौछार या गोलियों की मार सहनी पड़ती है, जेल-यात्रा करनी पड़ती है, राजनीतिक सत्ता का कोपभाजन बनना पड़ता है। राष्ट्रीय स्तर पर चाहे भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन चला हो, चाहे गोरक्षा आन्दोलन चला हो, चाहे शराबबन्दी आन्दोलन चला हो, चाहे हिन्दी रक्षा आन्दोलन चला हो, चाहे जातिवाद पर आधारित आरक्षण नीति के विरुद्ध आन्दोलन चला हो इसी प्रकार के अनुभव आन्दोलनकारियों को होते रहे हैं। हर आन्दोलन को कुचलना, हर आन्दोलनकारी का मनोबल तोड़ना जैसे आज की व्यवस्था का राजधर्म बन गया है। ये महामारियाँ समग्र समाज को विभाजित कर रही हैं, तोड़ रही हैं, गला-सड़ा रही हैं, क्षीण और अशक्त कर रही हैं और इसका खामियाजा किसी भी राष्ट्रीय संकट के दौरान देश को भारी कीमत देकर चुकाना पड़ सकता है यह विवेक और दूरदर्शिता राजधर्म से खिलवाड़ करने वालों में आखिर कब पैदा होगी?सैकड़ों वर्षों की दासता के रूप में यह खामियाजा देश भुगत चुका है, इस सत्य और तथ्य को आजादी के 67 वर्ष में ही हम कैसे भूल गये?हमारे राजधर्म के रक्षक इस भुलावे के शिकार हैं कि सुधार समग्रता से नहीं बरंच शनैः-शनैः किस्तों में, कुछ औपचारिकताओं का ढोंग रचाने से होता है। इस नीति का पालन करने से किसी भी महामारी के तेवर ढीले नहीं पड़े हैं वरंच सख्त पड़ते गये हैं। महामारी का अंत दवा-दारू से नहीं आप्रेशन से होता है, सुनार की हथौड़ी से नहीं लुहार के हथौड़े से होता है। यह दयानन्द और गांधी का समाज नहीं है जिसमें कुछ मानवता, शालीनता, सभ्यता बची हुई थी अतः सुधार और स्वाधीनता की उनकी जंग सफल रही। आज का समाज अन्ना हजारे का समाज है जिसमें दानवता, बर्बरता और असभ्यता का बोलबाला है अतः आन्दोलन की धार को उसके अनुरूप ही तेज करना होगा।

महामारियाँ ऊपर से थोपी नहीं जातीं बल्कि यह हमारे अपने ही क्षुद्र स्वार्थों का परिणाम होती हैं जो धीरे-धीरे पोषित और पल्लवित होकर इतना विकराल रूप धारण कर लेती हैं कि समाज के लिए बोझ, अभिशाप और कलंक बन जाती हैं। इनसे ग्रसित समाज को न तो सभ्य समाज माना जा सकता है, न संगठित समाज माना जा सकता है, न सशक्त समाज माना जा सकता है, न दूरदर्शी समाज माना जा सकता है, न विश्वसनीय समाज माना जा सकता है जो अपने युग धर्म का पालन निष्ठा, गरिमा और ईमानदारी से कर सके। एक नशेड़ी स्मैकिया से आप समाजोद्धार की, देश सेवा की, परोपकार की आशा कैसे रख सकते हैं जो समाज के लिए राहत नहीं आफत बना हुआ है?पुलिस भी इस डर से उस पर हाथ नहीं उठाती कि कहीं हल्की चोट से भी वह मर न जाये भले ही उस पर कितनी ही चोरियों के संगीन व सिद्ध आरोप क्यों न हों। ऐसे व्यक्ति किसी के जीवन रक्षक तो बन ही नहीं सकते, जानलेवा भले बन जायें। शराबी और स्मैकिया आखिर कौन है, हमारा ही पिता, भाई, पुत्र, मामा, भतीजा या भानजा है। पहली बार नशा करके जब वह घर आता है तो कोई उसे टोकता, डांटता नहीं, उस पर तौवा या प्रायश्चित करने का दबाव नहीं डाला जाता। पत्नी, माता, बेटी इस अवसर पर सही भूमिका नहीं निभा पाते। जब किसी महामारी के विरुद्ध आन्दोलन होता है तो कितने उसमें शामिल होने के लिए सड़कों पर उतरते हैं?सवा सौ करोड़ जनता भ्रष्टाचार से त्रस्त है लेकिन अन्ना हजारे के साथ दो लाख लोग भी सड़क पर नहीं उतरे। जो उतरे उनमें से चालीस प्रतिशत राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के लोग थे, तीस प्रतिशत स्वामी रामदेव के लोग थे, तीस प्रतिशत आम जनता के लोग थे। जब अपने स्वार्थ पूरे न होते देख संघ और रामदेव ने अन्ना का साथ छोड़ दिया, अरविन्द केजरीवाल की टीम बाहर राजनीति करने निकल आई तो जनता के तीस प्रतिशत लोग भी इस विश्वासघात से आहत होकर किनारा कर गये। किसी भी सफल आन्दोलन के लिए गम्भीर और ठोस विचार-सरणी चाहिए, मजबूत संगठन और प्रशिक्षित कार्यकर्ता चाहिएं, विश्वसनीय, ईमानदार और अनुशासित नेतृत्व चाहिए। अन्ना हजारे के पास इन सबका अभाव था, स्वार्थी लोगों का जमघट था अतः उनकी मुहिम ईमानदाराना होकर भी फ्लॉप हो गई। उस मुहिम को पुनः शुरू करना अब पहले से भी कठिन है क्योंकि विश्वसनीयता का गहरा संकट व्याप्त हो गया है।

> साम्प्रदायिकता/जातिवाद/भ्रष्टाचार/नशाखोरी/पाखण्ड/शोषण/नारी उत्पीड़न से जो विष-वृक्ष पल्लवित, पुष्पित फलित हो रहा है उसे उखाड़ फेंकना ही राष्ट्रधर्म है। क्या आप अपने इस राष्ट्रधर्म का पालन कर रहे हैं?

इन कटु अनुभवों का अर्थ यह नहीं निकाल लेना चाहिए कि ऐसे आन्दोलनों में हिस्सा लेना अर्थहीन है, निरर्थक है, निष्प्रभावी है। विफलता किसी भी कर्मयोगी में पराजय बोध पैदा नहीं करती, बल्कि उत्साह पैदा करती है, अपनी कमियों को समझने व उन्हें दूर करने का अवसर और विवेक पैदा करती है। महाराणा प्रताप और शिवाजी में बार-बार की पराजय भी पराजय बोध पैदा नहीं कर सकी इसलिए अंत में वे शिरोमणि अवस्था को प्राप्त कर पाये। दयानन्द और गांधी भी ऐसी पराजयों से कभी निराश, हताश नहीं हुए व निरन्तर संघर्षरत रहे। अपनी सफलताओं के कारण वे इतिहास में अमर हो गये। कबीर और नानक के पथ में भी कम बाधाएँ नहीं आईं लेकिन विपरीत परिस्थितियों में उन्होंने सुधार का शंखनाद निनादित रखा। महामारियों के विरुद्ध चल रहा संघर्ष अपनी निरन्तरता बनाये हुए है लेकिन स्थिति ज्वार-भाटे की है अर्थात् कभी वह शांत मुद्रा में आ जाता है तो कभी उग्र स्वरूप धारण कर लेता है। आज का युग प्रिण्ट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का है, इसके सहयोग से कोई भी आन्दोलन क्रांति का स्वरूप ग्रहण कर सकता है। लेकिन ये मीडिया भी स्वतन्त्र नहीं है, मालिक, सरकार और विज्ञापनदाता का शिकंजा उस पर कसा रहता है, अतः उन पर अधिक भरोसा करने के बजाय आन्दोलन को अपने ही पांव पर खड़े होना व चलना सीखना होगा। आज अनेक एन.जी.ओ. भी परोपकार और समाज सुधार के काम में लगे हुए हैं। उनकी मदद भी ली जा सकती है लेकिन वे भी अर्थ के मामले में पराश्रित रहते हैं, धन्ना सेठों, सरकारों व विदेशी आकाओं के हाथ उनकी नकेल रहती है अतः किसी भी समय वे धोखा दे सकते हैं। यह एक त्रासदी है कि महामारियों के विरुद्ध छिड़ी जंग को सरकारें व प्रशासन अपने विरुद्ध छिड़ा जंग मान बैठती हैं। कारण, जितने भी क्षुद्र कारक हैं उनका कहीं न कहीं अनैतिक जुड़ाव सरकार या प्रशासन से होता है। जैसे शराबबन्दी आन्दोलन शुरू होने पर सरकार और प्रशासन आन्दोलन के विरुद्ध कानून व व्यवस्था के नाम पर खड़ा हो जाता है जबकि परदे के पीछे की हकीकत यह होती है कि शराब की डिस्टिलरियों से करोड़ों रुपया हर महीने राजनीतिक दलों भ्रष्ट राजनेताओं और प्रशासकों की जेब या तिजोरी में जाता है। आन्दोलन के दिनों में यह राशि और बढ़ा दी जाती है। ऐसे में सरकार व प्रशासन का सक्रिय होना स्वाभाविक है। आन्दोलन के शीर्ष नेतृत्व में भी कई बार भ्रष्ट व स्वार्थी लोग घुसपैठ कर लेते हैं। आन्दोलन जब शीर्ष पर होता है तो शीर्ष नेतृत्व की गिरफ्तारी होती है तब ये भ्रष्ट नेतृत्व सक्रिय होकर बिक जाते हैं, समझौता कर लेते हैं, जेल के अन्दर ही इन्हें थैलियाँ दी जाने लगती हैं। अचानक, कोई न कोई बहाना बनाकर, आन्दोलन वापस ले लिया जाता है। इस तरह के विश्वासघाती तत्त्व हर आन्दोलन में घुसपैठ करने की कोशिश करते हैं और सरकारी आश्वासनों पर भी आन्दोलन खत्म करा देते हैं। हिन्दी आन्दोलन, गोरक्षा आन्दोलन, शराबबन्दी आन्दोलन में यही सब कुछ देखने को मिला। लेकिन इसे आन्दोलनों की विफलता मान लेना भूल होगी। जो विचार आन्दोलन के दौरान समाज में, लोगों के बीच जाते हैं वे स्थायी निधि बन जाते हैं, प्रेरक तत्त्व बन जाते हैं, महामारी के विरुद्ध असंतोष, घृणा के भाव सदा बने रहते हैं। विचार, संघर्ष और आन्दोलन के प्रभाव अवरोधक बनकर महामारी को आगे बढ़ने से रोके रखते हैं।

आगामी पंक्तियों में हम साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, शोषण, पाखण्ड और नारी उत्पीड़न जैसी सात महामारियों पर चिन्तन करते हुए विचार करेंगे कि वे कैसे समाज को दीमक बनकर खोखला, जर्जरित व श्रीहीन कर रही हैं और उनके विरुद्ध आन्दोलित होना क्यों जरूरी है। आन्दोलित होने का तात्पर्य मात्र फायर ब्रान्ड कार्यकर्ता बन सड़क पर उतरना नहीं मान लेना चाहिए। आन्दोलन के कई स्तर व स्वरूप होते हैं जो लेखन, वाचन, आचरण, संवाद, बहस, सम्पर्क, समाधान और प्रदर्शनी लगाने तक विस्तृत हैं। अतः सच्चा आन्दोलनकारी वही है जो अपनी क्षमता के अनुसार इनमें से किसी न किसी एक माध्यम को चुनकर महामारी के विरुद्ध सतत संघर्ष करता है बिना किसी प्रदर्शन व लोभ के। यह हमारा नैतिक कर्त्तव्य और सामाजिक दायित्व ही नहीं है बल्कि हमारा युगधर्म भी है। किसी भी धर्मानुष्ठान का भास्वर परोपकारिता होती है, स्वार्थपरता नहीं अतः उसी मर्यादा, संयम व शालीनता से हमें अपने इस युगधर्म को समझना और निभाना है। भले ही हम संख्या में एक हों अथवा अनेक इससे हमारे आन्दोलन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। अधिकांश आन्दोलन 'एकला चलो रे' के सूत्र पर ही प्रारम्भ होते देखे गये हैं। मंगल पाण्डे अकेला ही था जिसने 1857 के प्रथम स्वाधीनता आन्दोलन का शंखनाद किया था। उसका शुरू किया आन्दोलन 15 अगस्त 1947 को जाकर विजयोन्माद के साथ समाप्त हुआ। न विचार कभी मरते हैं, न आन्दोलन खत्म होते हैं। गोरक्षा आन्दोलन, हिन्दी आन्दोलन, शराबबन्दी आन्दोलन, जाति आधारित आरक्षण विरोधी आन्दोलन सदियों से किसी न किसी रूप में इस देश में चलते आ रहे हैं और अपना मकसद पूरा होने तक चलते रहेंगे। राजनीतिक स्वाधीनता हमारा अंतिम नहीं अनेक लक्ष्यों में से एक लक्ष्य था। स्वाधीनता आन्दोलन के साथ ही साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, शोषण, पाखण्ड, नारी उत्पीड़न के मामले भी जुड़े थे जिन पर दयानन्द और गांधी निरन्तर 19वीं और 20वीं शताब्दी में चिन्तन करते रहे हैं। अतः आजादी मिलते ही संघर्ष के ये तमाम मुद्दे खत्म नहीं हो जाते। देश को उम्मीद थी कि आजाद भारत की सरकार और प्रशासन अपने इन संवैधानिक दायित्वों का ईमानदारी से निर्वहन करेंगे। यह देश का दुर्भाग्य है कि ऐसा सम्भव नहीं हो सका।

सरकार और प्रशासन की इस विफलता का ठीकरा जनता के सिर नहीं फोड़ा जा सकता क्योंकि जनता तो समय-समय पर सड़क पर उतर कर सरकार व प्रशासन को उसके दायित्व का बोध और स्मरण कराती रही है। सरकार और प्रशासन भले घुटने टेक जायें लेकिन जनता अपने नैसर्गिक दायित्व से विमुख नहीं हो सकती। हमारा संघर्ष अथवा आन्दोलन सीधे-सीधे न किसी सरकार से है और न ही किसी प्रशासन से बल्कि उस व्यवस्था से है जो इन महामारियों का संरक्षण और पोषण कर रही है, उनके उन्मूलन में बाधक बनी हुई है। यह व्यवस्था का ही दोष है कि कथित समाद्रोही तत्त्वों का शिकार होकर वह भ्रष्ट हो जाती है जो सरकार व प्रशासन को भी आगे चलकर भ्रष्ट कर देती है, आन्दोलन विरोधी बना देती है। स्वस्थ लोकतन्त्र का तकाजा है कि सरकार व प्रशासन अपनी तिजोरियों की जरूरत को नहीं मुद्दों की अहमियत और नज़ाकत को समझें व भ्रष्ट होने से, आन्दोलन विरोधी होने से बचें। अस्तु

साम्प्रदायिकता

सन् 1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम अंतिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर के नेतृत्व में हिन्दू-मुसलमानों ने कंधे से कंधा मिलाकर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ा था। इस संग्राम में सिखों व डोगरों की मदद पाकर अंग्रेजों ने जीत हासिल की थी। तत्पश्चात् सत्ता का हस्तांतरण ईस्ट इण्डिया कम्पनी से ब्रिटिश संसद को हो गया था। महारानी विक्टोरिया ने भारतीय जनता को अनेक लुभावने वायदे देकर आश्वस्त किया था लेकिन वस्तुस्थिति दूसरी रही। भारत की एकता और अखण्डता को खत्म करने के लिए ब्रिटिश शासकों ने साम्प्रदायिक कार्ड खेलना शुरू कर दिया। भाषा, मजहब, कौम, क्षेत्र के नाम पर बंटवारा करके, एक के मुकाबले दूसरे को अनादृत व पुरस्कृत करके, एक के मुकाबले दूसरे को प्रशासनिक सेवा-सुविधाएँ अधिक देकर, साम्प्रदायिक उन्माद बढ़ाकर साम्प्रदायिक एकता को नष्ट करने के नित नये षड्यन्त्र रचे जाने लगे। मुस्लिम, दलित, सिख राजनीति में अलग आरक्षण मांगने लगे, अपने को संगठित व सक्रिय रखने के लिए अकाली दल, मुस्लिम लीग, दलित संगठन, हिन्दू महासभा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे संगठन अस्तित्व में आने लगे जिन्हें आपस में लड़वाने के लिए ब्रिटिश शासन कोई न कोई मुद्दा जानबूझकर पैदा कर देता था। इस बढ़ते साम्प्रदायिक उन्माद के कारण ही अन्ततः सन् 1947 में भारत का विभाजन होने पर खण्डित आज़ादी मिली।

आजादी मिलने पर भी साम्प्रदायिकता खत्म नहीं हुई बल्कि दलगत राजनीति के कारण उत्तरोत्तर बढ़ती ही गई। आजादी के बाद हजारों साम्प्रदायिक दंगे भारत में हो चुके हैं। जबसे उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी की अखिलेश सरकार आई है तबसे ढाई वर्ष की अवधि में 600 साम्प्रदायिक दंगे अकेले उत्तर प्रदेश में हो चुके हैं। देहात पहली बार साम्प्रदायिक अग्नि में झुलसना शुरू हुआ। आजाद भारत में बाबरी मस्जिद के विध्वंस से साम्प्रदायिक वातावरण और अधिक बिगड़ा जिससे मुम्बई काण्ड में सैकड़ों लोग मारे गये, सन् 1984 के सिक्ख विरोधी दंगे में हजारों निरपराध सिख मारे गये, सन् 2002 में गोधरा रेल हादसे के बाद समूचे गुजरात में मुसलमानों पर कहर बरपा, कश्मीर घाटी से लगभग चार लाख कश्मीरी ब्राह्मणों का निष्कासन हुआ, बांग्लादेशी घुसपैठियों के कारण असम, उड़ीसा के हालात बिगड़े। पंजाब में लगभग दस वर्ष तक खालिस्तानी आतंकवादियों का कोहराम रहा। हिन्दी-पंजाबी के झगड़े के कारण पंजाब का पुनः विभाजन हरियाणा के रूप में हुआ।

शेष अगले अंक में

thearyasamaj.org

पृष्ठ–1 का शेष

आर्य जगत के मूर्धन्य, योगनिष्ठ संन्यासी स्वामी दिव्यानन्द जी का अमृत महोत्सव

स्वागत तथा सम्मान किया। स्वामी जी को गणमान्य व्यक्तियों ने प्रशस्ति पत्र भी भेंट किया।

इस अवसर पर क्रान्तदर्शी संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने अपने प्रभावशाली उद्‌बोधन में स्वामी दिव्यानन्द जी को शुभ कामनायें अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी जी योग के साथ–साथ समाज में व्याप्त हिंसा के विरुद्ध भी आवाज उठायें। स्वामी जी ने नेपाल यात्रा के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि नेपाल में गदाई का एक बहुत बड़ा मेला लगता है जिसमें लाखों की संख्या में पशुबलि दी जाती है। मैं नेपाल के बड़े नेताओं से मिला और इस पर विचार–विमर्श किया। उन्होंने कहा कि मैं आने वाले इस मेले में उन नेताओं के साथ जाकर इस घृणित परम्परा को बन्द करवाने का भरसक प्रयास करूँगा। स्वामी जी ने कहा कि मैं स्वामी दिव्यानन्द जी को बहुत समय से जानता हूँ और वे निष्काम भाव से एक ही लक्ष्य को लेकर योग के रास्ते पर चल रहे हैं और योग को जन–जन तक पहुँचाने में लगे हैं।

इस अवसर पर डॉ. योगानन्द शास्त्री जी ने कहा कि स्वामी जी ने योग के माध्यम से हजारों लोगों को लाभान्वित किया है तथा देश–विदेश में आपने अनेकों शिविर लगाये हैं आपका यह प्रयास अत्यन्त उच्चकोटि का है। स्वामी प्रणवानन्द जी ने उनके निःस्वार्थ कार्यों की चर्चा करते हुए कहा कि स्वामी जी ने योग शिक्षा तथा समाज सेवा के साथ–साथ लेखन तथा प्रकाशन का कार्य भी बहुलता से किया है। इस अवसर पर बोलते हुए स्वामी धर्मानन्द जी ने कहा कि स्वामी दिव्यानन्द जी वो महान आत्मा है जो मौन रहकर बगैर किसी शोर–शराबे के समाज सेवा में लगे हुए हैं वे वैदिक धर्म व संस्कृति में अटूट आस्था रखते हैं तथा योग के द्वारा रोग चिकित्सा आयुर्वेद चिकित्सा के माध्यम से मानव मात्र की सेवा कर रहे हैं। समारोह में अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने स्वामी जी के निश्चल व्यक्तित्व उनके द्वारा किये जा रहे योग वृद्धि के कार्यों पर विचार व्यक्त करते हुए शुभ कामनायें प्रेषित की।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान तथा समारोह के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्‌बोधन में अभिनन्दन समारोह की प्रासंगिकता तथा महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह केवल स्वामी जी का अभिनन्दन समारोह ही नहीं है अपितु वेदों द्वारा निर्देशित योग विद्या को आधुनिक तकनीक के द्वारा जन–जन तक पहुँचाने की मुहिम भी है। स्वामी जी ने अपने अनुभवों और त्याग से योग विद्या को काफी प्रचारित तथा प्रसारित किया है तथा लोगों को लाभान्वित किया है लेकिन स्वामी जी की इच्छा है कि आज के इस आधुनिक युग में जब तक वैज्ञानिक तकनीक, कम्प्यूटर और इण्टरनेट के माध्यम से योग को नहीं जोड़ा जायेगा तब तक यथेष्ठ लाभ नहीं होगा। अतः इस भव्य आयोजन के माध्यम से जो राशि स्वामी जी को प्राप्त होगी उसे योग विद्या को जन–जन तक पहुँचाने तथा लाभ प्रदान करने के लिए वैज्ञानिक उपकरणों को क्रय करने तथा आधुनिक प्रचार माध्यमों में व्यय किया जायेगा जिससे स्वामी दिव्यानन्द जी योग द्वारा विश्व शान्ति निरोगता तथा सबको चरित्रवान बनाने का जो स्वप्न देखते हैं उसे कार्य रूप में परिणित किया जा सके। स्वामी जी ने कहा कि स्वामी दिव्यानन्द जी योग के अतिरिक्त लेखन तथा प्रकाशन का कार्य भी बहुलता से कर रहे हैं उसमें भी इस आयोजन से काफी लाभ प्राप्त होगा। उन्होंने बताया कि आधुनिक संचार के माध्यमों से प्रचार कार्य की गति को बढ़ाया जायेगा। स्वामी जी ने कहा कि अच्छे कार्य करने वालों का

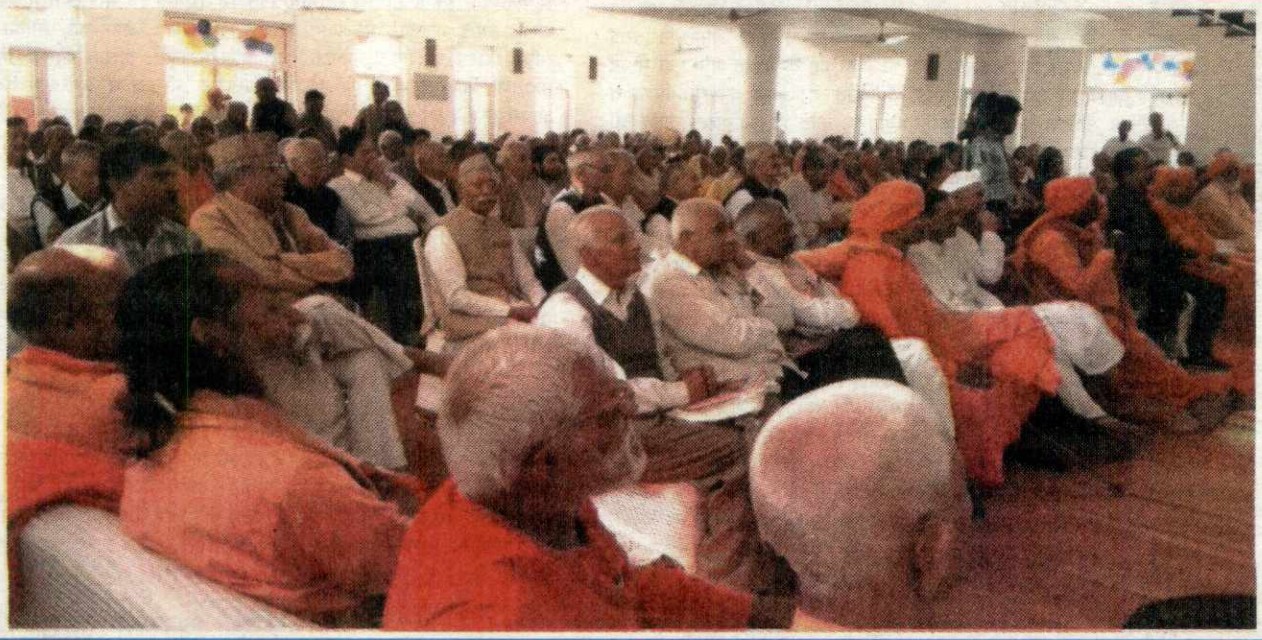

अभिनन्दन तो होना ही चाहिए इससे कार्य करने की क्षमता में वृद्धि होती है और सहयोग की भावना पनपती है।

स्वामी दिव्यानन्द जी के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डालते हुए एक शानदार अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन डॉ. योगानन्द शास्त्री एवं अन्य गणमान्य संन्यासियों कर कमलों से किया गया।

इस अवसर पर आर्य समाज सिरसागंज, स्त्री आर्य समाज मॉडल टाउन पानीपत, पातंजल योगधाम ज्वालापुर, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ आर्य समाज देवधर यमुनानगर सहित अनेकों स्थानों से महानुभावों ने आकर स्वामी जी का अभिनन्दन किया। गुरुकुल शुक्रताल के आचार्य श्री इन्द्रपाल, गुरुकुल खेड़ा खुर्द आर्य गुरुकुल नोएडा तथा योग निकेतन की बहने भी इस कार्यक्रम में उपस्थित हुई। खचाखच भरे योग निकेतन के बृहद हाल में आयोजित यह गरिमामयी कार्यक्रम अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ तथा ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था में भोजन ग्रहण करने के उपरान्त समारोह विसर्जित हुआ।

thearyasamaj.org

मध्य प्रदेश के नागदा में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का किया गया भव्य सम्मान

आर्य समाज नागदा का वार्षिकोत्सव तथा 51 कुण्डीय राष्ट्र रक्षा महायज्ञ कई संकल्पों के साथ सम्पन्न

मध्य भारत की प्रसिद्ध आर्य समाज नागदा का वार्षिकोत्सव 18 से 20 नवम्बर, 2014 तक उत्साहपूर्ण वातावरण में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम में 51 कुण्डीय राष्ट्ररक्षा महायज्ञ का भी भव्य आयोजन किया गया था। इस विशेष यज्ञ की ब्रह्मा प्रसिद्ध

विदुषी सुश्री अंजली आर्या थीं। वार्षिकोत्सव का आकर्षक कार्यक्रम स्व. श्री सेवाराम पटेल की बावड़ी में सैकड़ों लोगों की गरिमामयी उपस्थिति में आयोजित किया गया था। इस अवसर पर सुश्री अंजली आर्या के अतिरिक्त डॉ. लक्ष्मी नारायण सत्यार्थी, जोधपुर से पधारे श्री रामनिवास गुणग्राहक तथा श्री काशीराम अनल और हीरालाल आर्य भजनोपदेशकों के सुन्दर भजनों तथा विद्वानों के ओजस्वी विद्वत्तापूर्ण विचारों को श्रोताओं ने तन्मयता के साथ श्रवण किया।

19 नवम्बर को सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी प्रात: 8 बजे जैसे ही रेलवे स्टेशन पर ट्रेन से उतरे तो वहां सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने स्वामी आर्यवेश जी का भव्य स्वागत किया। स्वामी जी को फूल मालाओं से लाद दिया गया। मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ. लक्ष्मणदास आर्य के नेतृत्व में सभा के अधिकारी तथा आर्य समाज नागदा के कार्यकर्ता सैकड़ों की संख्या में उपस्थित थे। रेलवे स्टेशन से स्वामी जी को सभा स्थल तक ले जाया गया। जहाँ स्वामी जी का मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों तथा गणमान्य व्यक्तियों एवं आर्य समाज नागदा के अधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं ने अलग-अलग स्वागत एवं अभिनन्दन किया। स्वामी जी को उत्साही कार्यकर्ताओं ने शॉल उढ़ाकर श्रीफल भेंटकर तथा अलग-अलग दो प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

डॉ. लक्ष्मणदास आर्य, श्री पूनम चन्द्र आर्य, प्रधान आर्य समाज नागदा, श्री कमल आर्य मंत्री, श्री गोविन्द राम आर्य दीपालपुर, श्री लक्ष्मीनारायण पाटीदार मौलाना, श्री किशन लाल आर्य, श्री छोटे लाल खरे-इन्दौर, श्री संजय गायकवाड़ एडवोकेट-इन्दौर, श्री भानुप्रकाश शास्त्री-इन्दौर, श्री करण सिंह चीकली, श्री ओकार सिंह चावला, श्री नाग सिंह, श्री जीवन सिंह वामना, श्री विक्रम सिंह डूंगरिया, श्री मोती सिंह खजूरिया, आर्य समाज के संरक्षक श्री रामसिंह जी पटेल, भजनोपदेशक, श्री काशीराम अनल, भजनोपदेशक श्री हीरालाल आर्य, श्री तिरस पाल आर्य, श्री राम निवास गुणग्राहक सुश्री अंजली आर्या, श्री चन्देल एडवोकेट, श्री यशवन्त सिंह पटेल, श्री भंवर लाल पांचाल सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने स्वामी जी को पुष्पहार पहनाकर सम्मानित किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन डॉ. लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी ने अत्यन्त कुशलता पूर्वक किया।

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी अपने ओजस्वी उद्बोधन का प्रारम्भ नागदा और मध्य भारत के लोकप्रिय नेता स्व. श्री सेवाराम पटेल को श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ किया। स्वामी जी ने कहा कि श्री सेवाराम पटेल एक विशाल हृदय तथा गम्भीर व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने मानव मात्र की सेवा में अपने जीवन को अर्पित कर दिया। उन्होंने अपने सेवा कार्यों में भेदभाव तथा पक्षपात को कभी प्रश्रय नहीं दिया। वे मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान रहे तथा वर्षों तक सार्वदेशिक सभा की कार्यकारिणी में बने रहे। स्वामी जी ने बताया कि 2005 में बेटी बचाओ अभियान की 15 दिवसीय यात्रा में अपने साथियों के साथ वे सम्मिलित हुए थे और उन्होंने अपनी कर्मठता से एक अमिट छाप छोड़ी थी। उन्होंने कहा कि उनके निधन से आर्य समाज की ऐसी क्षति हुई है जिसे आसानी से पूर्ण नहीं किया जा सकता। उन्होंने आर्य समाज के कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि वे श्री पटेल जी से प्रेरणा लें और आर्य समाज के कार्यों को गति प्रदान करने में जुट जायें।

स्वामी जी ने कहा कि आज सबसे बड़ी आवश्यकता आर्य समाज को तेजस्वी स्वरूप प्रदान करने की है। चारों तरफ फैला भ्रष्टाचार, आतंकवाद, पाखण्ड, अन्धविश्वास समाज की जड़ों को खोखला कर रहे हैं और इनका मुकाबला वैचारिक क्रांति के द्वारा ही किया जा सकता है विचारों की शक्ति सबसे बड़ी शक्ति होती है। हमें आर्य समाज के विचारों, सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुँचाना है देश की आजादी की लड़ाई में आर्य समाज का बहुत बड़ा योगदान रहा है। आज फिर से आर्य युवकों को आगे आना होगा। स्वामी जी ने बढ़ती शराबखोरी की आदत को समाज के लिए घातक बताते हुए आर्य जनों को इसके विरुद्ध

आन्दोलन करने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि शराबबन्दी सारे देश में लागू करवाने का युद्ध स्तर पर प्रयास किया जाना चाहिए। स्वामी जी ने सप्तक्रांति के मुद्दों की चर्चा करते हुए कहा कि आज हम सब संकल्प लें कि भारतीय संस्कृति, सदाचार तथा वैदिक सिद्धान्तों के विषय में अपने मित्रों आस-पास के व्यक्तियों से वार्ता करें गोष्ठियाँ आयोजित करें तथा अन्धविश्वास, सामाजिक कुरीतियों तथा समाज में फैल रहे भ्रष्टाचार, कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, नशाखोरी जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर आर्य समाज क्या सोचता है इसकी चर्चा करें तथा अपने कार्यक्रमों के द्वारा लोगों को आकृष्ट करने का प्रयास करें। आज समाज के विभिन्न वर्गों को एकजुट करके बुराईयों के विरुद्ध पूरे देश में जोरदार अभियान चलाने की आवश्यकता है।

स्वामी जी ने गोवंश की वृद्धि तथा गोहत्या, पशुबलि, मांस निर्यात के बारे में विवरण प्रस्तुत करते हुए सरकार से अपील की कि पशुबलि तथा मांस निर्यात को अविलम्ब बन्द किया जाना चाहिए। स्वामी जी ने अपने धारा प्रवाह ओजस्वी उद्बोधन में आर्य समाज के संगठन की चर्चा करते हुए कहा कि संगठन में कुछ बिखराव नजर आ रहा है। उन्होंने अपना संकल्प दोहराते हुए कहा कि जब तक नीचे से लेकर ऊपर तक एकता स्थापित नहीं हो जाती मैं अपने प्रयत्न जारी रखूँगा। उन्होंने सभी पक्षों के नेताओं का आह्वान किया कि मुकदमेंबाजी से कुछ भी प्राप्त नहीं होगा हम सब मिल बैठकर परस्पर वार्ता करें क्योंकि वार्ता से प्रत्येक समस्या का समाधान सम्भव है।

इस अवसर पर जोधपुर से पधारे वैदिक विद्वान श्री रामनिवास गुण ग्राहक ने यज्ञ की वैज्ञानिक तथा व्यवहारिक व्याख्या प्रस्तुत कर श्रोताओं का मन मोह लिया। उनके विद्वत्तापूर्ण प्रवचनों से नागदा की जनता पर विशेष प्रभाव दृष्टिगोचर हो रहा था। यज्ञ की ब्रह्मा तथा प्रसिद्ध विदुषी उपदेशिका सुश्री अंजली आर्या को सुनने के लिए भारी संख्या में महिलायें तथा पुरुष पहुंचते रहे बहन अंजली आर्या के उपदेशों ने नागदा की जनता पर विशेष प्रभाव छोड़ा, उनको सुनने की तीव्र उत्कंठा श्रोताओं में देखी जा सकती थी। उन्होंने महिला सशक्तिकरण पर विस्तार से चर्चा करते हुए स्वतन्त्रता एवं समान अधिकार के नाम पर आई स्वच्छन्दता को अत्यन्त घातक बताया। उन्होंने अपने प्रेरणाप्रद उद्बोधन में महिलाओं से कई संकल्प भी करवाये तथा भारतीय संस्कृति को बचाने का आह्वान किया।

समारोह के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में कार्यकर्ताओं की बैठक आयोजित की गई जिसमें वरिष्ठ आर्य कार्यकर्ताओं ने अत्यन्त उत्साह से भाग लिया। इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों के अतिरिक्त शिविर आदि लगाने के निर्णय लिये गये। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

thearyasamaj.org

आर्य समाज, राजनगर, गाजियाबाद का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज राजनगर, गाजियाबाद का 30वाँ वार्षिकोत्सव 1 दिसम्बर, से 7 दिसम्बर, 2014 तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर यजुर्वेदीय महायज्ञ डॉ. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई के ब्रह्मत्व में आयोजित किया गया है। कन्या गुरुकुल सासनी की ब्रह्मचारिणियाँ सस्वर वेद पाठ करेंगी।

समारोह में समाज सुधार सम्मेलन, वेद सम्मेलन, आध्यात्मिक सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन तथा राष्ट्ररक्षा सम्मेलन सहित अनेकों अन्य कार्यक्रमों में अध्यात्म, वैदिक संस्कृति, मानव कल्याण, समाज सुधार, नैतिकता एवं राष्ट्रवाद से ओत-प्रोत कार्यक्रमों में आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं। 4 दिसम्बर को प्रात: 10.45 बजे 9वीं कक्षा से 12वीं कक्षा तक के छात्र-छात्राओं की अन्तर्विद्यालय भाषण प्रतियोगिता डॉ. बी. बी. सिंह पूर्व प्राचार्य एम. एम. एच. स्नातकोत्तर कॉलेज की अध्यक्षता में आयोजित की गई है। समारोह में डॉ. सोमदेव शास्त्री, डॉ. वागीश आचार्य, आचार्य चन्द्रपाल शास्त्री, पं. माया प्रकाश त्यागी, डॉ. वीरपाल विद्यालंकार, श्रीमती विभा रावत, श्री देवेन्द्र पाल वर्मा, श्री कुलदीप वर्मा सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

- सत्यवीर चौधरी, मंत्री

आर्य समाज मंगोलपुरी, दिल्ली के वार्षिकोत्सव के अवसर पर भजन सन्ध्या का आयोजन

आर्य समाज मंगोलपुरी, दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर (रविवार) 3 नवम्बर, 2014 को के-ब्लाक सीनियर सेकेण्डरी स्कूल के सामने जे-ब्लाक वाले पार्क में भजन-संध्या का आयोजन किया गया है। दोपहर 2.30 बजे से आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में आचार्य गवेन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ का कार्यक्रम रखा गया है। समारोह में श्री गवेन्द्र शास्त्री के प्रवचन तथा अंकित शास्त्री के भजनोपदेश श्रोता सुन सकेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध समाजसेवी श्री राम कुमार भगत जी करेंगे। इस अवसर पर के. आ. यु. परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं।

- धर्मपाल आर्य, मंत्री

51 कुण्डीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का भव्य आयोजन

स्थानीय आर्य समाज पिपालिया मण्डी जिला-मन्दसौर (मध्य प्रदेश) के सौजन्य से 7 दिवसीय वेदकथा एवं यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया है। दिनांक 27 दिसम्बर, 2014 से 4 जनवरी, 2015 के इस अभूतपूर्व यज्ञोत्सव की सफलता के लिए पं. सत्यपाल सरल देहरादून सुश्री अंजली आर्य करथल की स्वीकृति प्राप्त है। 4 जनवरी, 2015 को महायज्ञ की पूर्णाहुति 51 कुण्डीय यज्ञ से होगी। जिसमें 204 जोड़े बैठकर स्वाहा स्वक्षाकार से अलौकिक परिदृश्य उपस्थित करेंगे।

- सत्येन्दु आर्य पाटीदार, आर्य समाज पिपलिया मण्डी

वैदिक सार्वदेशिक के सदस्यों से निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 250/- रुपये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा, और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। वैदिक सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2500/- रुपये है। जो महानुभाव इस पत्रिका को मंगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा ''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'' के नाम से सभा कार्यालय ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले वैदिक सार्वदेशिक को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, वैदिक सार्वदेशिक

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

सावधान ! सावधान !! सावधान !!!

सेवा में,

समस्त भारतवर्ष की आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं एवम् आर्य भाइयों के लिए आवश्यक सन्देश

विषय : क्या आप 100% शुद्ध हवन सामग्री का प्रयोग करते हैं?

आदरणीय महोदय,

क्या आप प्रातःकाल एवम् सायंकाल अथवा साप्ताहिक यज्ञ अपने घर अथवा अपने आर्यसमाज मन्दिर में करते हैं?यदि "हाँ" तो यज्ञ करने से पहले जरा एक दृष्टि ध्यान से, आप जो हवन सामग्री प्रयुक्त करते हैं, उस पर डाल लीजिए। कहीं यह 'घटिया' हवन सामग्री तो नहीं अर्थात् मिलावटी, बिना 'आर्य पर्व पद्धति' से तैयार तो नहीं?इस घटिया हवन सामग्री द्वारा यज्ञ करने से लाभ की बजाय हानि ही होती है।

जब आप घी तो 100% शुद्ध प्रयोग करते हैं, जिसका भाव 250/- से 300/- रुपये प्रति किलो है तो फिर हवन सामग्री भी क्यों नहीं 100% शुद्ध ही प्रयोग करते हैं?क्या आप कभी हवन में डालडा घी डालते हैं?यदि नहीं तो फिर 'अत्यधिक घटिया' हवन सामग्री यज्ञ में डालकर क्यों हवन की भी महिमा को गिरा रहे हैं?

अभी पिछले 26 वर्षों में लगभग भारत की 75% आर्यसमाजों में गया तथा देखा कि लगभग सभी आर्य समाजें व आर्यजन सस्ती से सस्ती हवन सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं। कई लोगों ने बताया कि उन्हें मालूम ही नहीं है कि असली हवन सामग्री क्या होती है?तथा हम तो कम से कम भाव पर जहां भी मिलती है वहीं से मंगवा लेते हैं।

यदि आप 100% शुद्ध उंच्च स्तर की हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं तो मैं तैयार करवा देता हूँ यह बाजार में बिक रही हवन सामग्री से महंगी तो अवश्य पड़ेगी परन्तु बनेगी भी तो 'देशी' हवन सामग्री अर्थात् जिस प्रकार 100% शुद्ध देसी घी महंगा होता है उसी प्रकार 100% शुद्ध हवन सामग्री भी महंगी पड़ सकती है। आज हम लोग मंहगाई के युग में जो 14 से 35 रुपये प्रति किलो तक की हवन सामग्री खरीद रहे हैं वह निश्चित रूप से मिलावटी है क्योंकि 'आर्य पर्व-पद्धति' अथवा 'संस्कारविधि' में जो वस्तुएँ लिखी है वे तो बाजार में काफी महंगी हैं।

आप लोग समझदार है तो फिर बिल्कुल निम्न कोटि की घटिया हवन सामग्री क्यों प्रयोग करते चले आ रहे हैं?घटिया हवन सामग्री प्रयोग कर आप अपना धन और समय तो खो ही रहे हैं साथ ही साथ यज्ञ की महिमा को भी गिरा रहे हैं और मन ही मन प्रसन्न हो रहे है कि आ हा ! यज्ञ कर लिया है।

भाइयों और बहनों! और पूरे भारतवर्ष की आर्यसमाजों के मंत्रियों और मन्त्रिणियो ! अब समय आ चुका है कि हमें जाग जाना चाहिए आप लोगों के जागने पर ही यज्ञ का पूरा लाभ आपको मिल सकेगा।

यदि आप लोग मेरा साथ दें तो मैं आप लोगों को वास्तव में वैदिक रीति के अनुसार ताजा जड़ी-बूटियों से तैयार करवाकर उच्च स्तर की 100% शुद्ध देशी हवन सामग्री जिस भाव भी मुझे पड़ेगी, उसी भाव पर अर्थात् 'बिना लाभ बिना हानि' सदैव भेजता रहूँगा। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आप लोग मेरा साथ देंगे तथा यज्ञ की गरिमा को बनाए रखेंगे।

धन्यवाद सहित,

नोट : 1. हमारे यहां लोहे, तांबे एवं टीन की नई चादर से विधि अनुसार बने हुए सुन्दर व मजबूत विभिन्न साइजों के हवन-कुण्ड (स्टैण्ड सहित), सर्वश्रेष्ठ गुग्गुल, शुद्ध असली देशी कपूर, असली सफेद/लाल चन्दन पाउडर, असली चन्दन समिधा एवं तांबे के यज्ञपात्र भी उपलब्ध हैं।

2. सभी आर्य सज्जनों से निवेदन है कि वे लगभग जिस भाव की भी हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं वह भाव हमें लिखकर भेज दें। हमारे लिए यदि सम्भव हुआ तो उनके लिखे भाव अनुसार ही हम बिल्कुल ताज़ा व बढ़िया से बढ़िया हवन सामग्री बनाकर भेजने का प्रयास कर देंगे। आदेश के साथ आधा धन अग्रिम मनीआर्डर से भेजें।

भवदीय

देवेन्द्र कुमार आर्य

विदेशों एवं समस्त भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त

(सुप्रसिद्ध हवन सामग्री विशेषज्ञ)

हवन सामग्री भण्डार

631/39, औंकार नगर-सी, त्रिनगर, दिल्ली-110035 (भारत)

मों. : 9958279666, 9958220342

आर्य समाज की गतिविधियाँ

श्री रामपाल शास्त्री के अनुज भ्राता सुरेश खत्री की स्मृति में शान्ति यज्ञ सम्पन्न

प्रसिद्ध समाजसेवी संस्था मानव सेवा प्रतिष्ठान (नई दिल्ली) के संस्थापक व कार्यकर्त्ता प्रधान, गुरुकुल गौतमनगर (दिल्ली) के स्नातक रामपाल शास्त्री के अनुज भ्राता सुरेश खत्री, सुपुत्र स्व. श्री रामपत आर्य (ईस्माइला, रोहतक, हरियाणा) जो भारतीय वायुसेना में कार्यरत थे का दिनांक 24 अक्टूबर, 2014 को आकस्मिक निधन हो गया। दिनांक 25 अक्टूबर, 2014 को गांव की श्मशान भूमि में पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज (दिल्ली), आचार्य सन्त कुमार जी (रोहतक), प्रियव्रत शास्त्री जी (गुरुकुल गौतमनगर), ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा), डॉ. कंवर सिंह (वेदवीर शास्त्री, संस्कृत प्रवक्ता, वेंकटेश्वर कॉलेज, दिल्ली), वीरेन्द्र शास्त्री (मन्त्री, आर्य समाज, नरेला), डॉ. श्यामदेव जी (रोहतक) एवं गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारियों द्वारा वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार सम्पन्न कराया गया।

दिनांक 2 नवम्बर, 2014 को डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी (एम. डी. यू., रोहतक), बेटी बचाओ आन्दोलन की पुरोधा बहन पूनम एवं प्रवेश आर्या व अनेक प्रतिष्ठित शास्त्री बन्धुओं के द्वारा शान्ति यज्ञ सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर डॉ. सुरेन्द्र जी ने

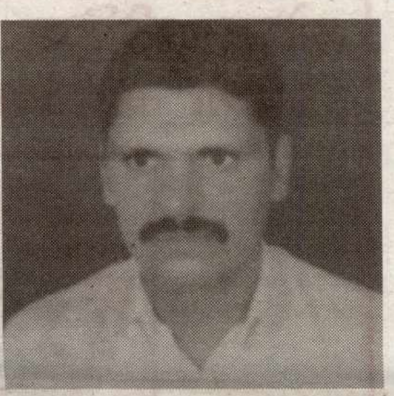

जन्म एवं मृत्यु के रहस्य को समझाते हुए परिवार को सान्त्वना प्रदान की तथा दोनों बहनों ने यज्ञ के पश्चात् अपने उद्बोधन में मनुयों को अपने कर्त्तव्यों के प्रति सदा सजग रहने के लिए निर्देश दिया। इसी मध्य आर्य समाज के अनेक साधु महात्मा व विद्वानों तथा गुरुकुलों के आचार्य व प्रबन्धकों ने शोक सन्तप्त परिवार को सान्त्वना प्रदान की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी चन्द्रवेश जी (टिटौली, रोहतक), श्री मधुर प्रकाश जी (दिल्ली), आचार्य बलवीर जी (रोहतक), श्री राजपाल जी, श्री रामपाल जी (आर्य समाज, नरेला), प्रिं. सुनीता (कन्या गुरुकुल ऐंचरा कला), डॉ. अमरकौर आर्या (प्रवक्ता, कन्या गुरुकुल पाढा, करनाल, समस्त कार्यकारिणी सहित), प्रिं. राजेश देवी एवं समस्त कार्यकारिणी सहित (होशियारी देवी कन्या कॉलेज, रठोड़ा, बागपत) आदि अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने शोकाकुल परिवार को सान्त्वना प्रदान की।

अन्त में रामपाल शास्त्री ने सभी अभ्यागत महानुभावों, विद्वानों व अतिथियों का धन्यवाद करते हुए कहा कि आप सबने इस दुखद समय में आकर परिवार को जो सम्बल प्रदान किया है उसके लिए शोकाकुल परिवार आप सबका आभारी है।

– चन्द्रदेव शास्त्री, मन्त्री मानव सेवा प्रतिष्ठान

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री 'संस्कृति–गौरव' सम्मान से सम्मानित

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान, ओजस्वी वक्ता, प्रख्यात, लेखक, यशस्वी सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को उनकी वैदिक धर्म प्रचार की सफल अमेरिका एवं कनाडा यात्रा की सम्पन्नता के पावन पर्व पर आर्य समाज सैक्टर-7, रोहिणी, दिल्ली के विशाल सभागार में "जय किशनदास सुनहरी देवी आर्या स्मृति ट्रस्ट" की ओर से शॉल, कलात्मक स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति पत्र एवं मोतियों की माला भेंटकर 'संस्कृति गौरव सम्मान' से विभूषित किया गया। उन्हें यह सम्मान भारत सरकार के सूचना प्रसारण मंत्रालय के पूर्व महानिदेशक पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि जी ने विशाल जनसमुदाय की उपस्थिति में प्रदान किया।

खचाखच भरे हाल में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. श्याम सिंह शशि ने कहा कि अपने आपमें ही एक संस्था युवा आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने जो कार्य अकेले कर दिखाया है वह अनेक संस्थाओं के लिए प्रेरणा है। देश ही नहीं अपितु विदेशों भी जाकर वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार एवं मानव कल्याण के क्षेत्र में जो रचनात्मक कार्य आचार्य जी ने किया है वह अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है।

अध्यात्म पथ (पंजी.) मासिक पत्रिका के तत्वावधान में आयोजित इस भव्य कार्यक्रम में डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया (प्रख्यात साहित्यकार), श्री जयभगवान अग्रवाल (पूर्व विधायक), श्री ताराचन्द्र बंसल (चेयरमैन, रोहिणी जोन), श्री यशपाल आर्य (निगम पार्षद), श्री सुरेन्द्र गुप्ता (प्रधान, उत्तरी पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल) श्री सोमनाथ आर्य (प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव), श्री हीरालाल चावला (उपाध्यक्ष, वेद संस्थान), डॉ. गोविन्द वल्लभ जोशी (वरिष्ठ पत्रकार), श्री सुखदेव आर्य तपस्वी (वेद प्रवक्ता), डॉ. धर्मवीर सेठी (संपादक नीति), श्री राजेन्द्र आर्य (अध्यक्ष, जयकिशन सुनहरी देवी ट्रस्ट), प्रो. अनिल राय (हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय), श्री अतुल आर्य (माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट) आदि गणमान्य महानुभावों ने आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को तत्वचिन्तक, श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री, प्रखर पत्रकार, निःस्वार्थ समाज सेवी बताकर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में विश्व कल्याण महायज्ञ का आयोजन किया गया। जिसके मुख्य यजमान श्री आशीष गुप्ता एवं श्रीमती शालिनी गुप्ता तथा श्री सुरेन्द्र चौधरी एवं श्रीमती सुनीता चौधरी थे। यज्ञोपरान्त आर्य समज सैक्टर-7, रोहिणी के यशस्वी प्रधान श्री शिव कुमार गुप्ता जी ने ध्वजारोहण किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन आर्य समाज सरस्वती विहार के यशस्वी मंत्री प्रिं. अरुण आर्य एवं आर्य समाज सैक्टर-7, रोहिणी के यशस्वी मंत्री श्री राजीव आर्य ने किया। उत्तरी पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री सुरेन्द्र गुप्ता जी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। समाज प्रधान श्री शिव कुमार गुप्ता जी ने सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम के अन्त में विशाल ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

– सूर्यकान्त मिश्र, सह-सम्पादक

गंगा तट, अनूपशहर (बुलन्दशहर) में वेद प्रचार शिविर सम्पन्न

अनूपशहर में गंगा तट पर कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर प्रतिवर्ष लगने वाले मेले में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी आर्य उपप्रतिनिधि सभा, जनपद-सम्भल, उ. प्र. ने 5 और 6 नवम्बर, 2014 को वेद प्रचार शिविर लगाया।

पौराणिक मान्यतानुसार अनूपशहर को छोटी काशी भी कहा जाता है, यह अत्यन्त प्राचीन तीर्थ स्थल है, विशेष रूप से पश्चिमी उत्तर प्रदेश के निवासियों के लिए। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी भी इस शहर में तीन बार इस मेले में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ पधारे थे।

इस अवसर पर दोनों दिन वैदिक यज्ञ, आचार्य जीवन सिंह, प्राचार्य स्वामी सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय, साधू आश्रम, अलीगढ़ के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। तदोपरान्त प्रतिदिन पं. राम अवतार, अलीगढ़ के सारगर्भित भजन और उपदेश तथा आचार्य जीवन सिंह और योगमुनि के वेद व्याख्यान होते रहे, जिन्होंने तीर्थ स्थानों और नदी स्नानों के प्रति अज्ञानतापूर्ण मान्यताओं, पाखण्डों और अवैदिक कृत्यों के बारे में जन समूह को आगाह किया और चेतावनी दी कि इस प्रकार के अनैतिक कृत्यों से धनहानि, अमूल्य समय का दुरुपयोग, चरित्र विनाश होकर मनुष्य जीवनभर दुःख सागर में गोते लगाता रहता है।

यदि मानव जाति को जीवन में सुख-शांति और कष्ट रहित आनन्द भोगना है तो आर्य समाज द्वारा दर्शाये जा रहे वेदानुसार सत्य के मार्ग पर ही चलना होगा। पंचमहायज्ञों और सोलह संस्कारों को घर-परिवार में अपनाना होगा तथा परमात्मा को विभिन्न स्थानों, मठों, नदी तटों व जलाशयों पर ढूढ़ने के प्रयासों को छोड़कर, सत्य, चेतन, आनन्द स्वरूप, निराकार, न्यायकारी, दयालू, अजर, अमर, अभय, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वज्ञ एकमात्र ओ३म् नाम परमात्मा की ही स्तुति प्रार्थना, उपासना के द्वारा उसकी शरण में जाना होगा।

परमात्मा सभी मनुष्यों को उनके द्वारा किये गये कर्मों के अनुसार न्याय, दया और वैभव प्रदान करता है।

शिविर का प्रबन्ध, उपप्रतिनिधि सभा, सम्भल के प्रधान साहू विजयपाल शरण और मन्त्री दयाशंकर आर्य के नेतृत्व में सराहनीय रहा।

इस अवसर पर वैदिक धर्म के प्रचारार्थ छोटी-छोटी पुस्तिका और पर्चे वितरित किये गये। जन-समूह ने भारी संख्या में उपस्थित होकर ज्ञानार्जन किया और कार्यक्रम की प्रशंसा की।

– दयाशंकर आर्य, मंत्री, आर्य उपप्रतिनिधि सभा, जनपद-सम्भल (उ. प्र.)

चतुर्वेद शतकम् विशेष यज्ञ का आयोजन

आर्यसमाज डोरीवालान न्यू रोहतक रोड नई दिल्ली का चतुर्वेद शतकम् यज्ञ 12 नवम्बर 2014 को सम्पन्न हुआ। चार दिन तक चलने वाले इस यज्ञ के ब्रह्मा यशस्वी धर्माचार्य श्री विश्वमित्र मेधावी जी रहे। इस यज्ञ में लगभग 28 यजमानों ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर आचार्य मेधावी जी का विशेष प्रवचन प्रतिदिन चला। उन्होंने बताया कि परमात्मा एक है इससे भिन्न कोई भी दूसरा तीसरा या चौथा नहीं हैं, उसी की उपासना करनी चाहिए। वही परमात्मा सच्चिदानन्द सर्वव्यापक एकरस है, उसकी उपासना करने से ही मनुष्य मुक्तिधाम को प्राप्त कर सकता है।

चार दिन तक चले इस चतुर्वेद शतकम यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर आर्यसमाज डोरीवालान के पूर्व प्रधान आदणीय श्री ओम प्रकाश नरूला जी अपने जीवन के 93 वर्ष पूर्ण करने एवं 94 वर्ष में प्रवेश करने पर कार्यक्रम में आए। समस्त आर्य बन्धु-भगिनियों ने बड़े उत्साह के साथ नरूला जी का जन्मदिन मनाया। सभी ने परमपिता परमात्मा से उनकी लम्बी आयु की कामना की।

इस कार्यक्रम में दिल्ली सरकार के पूर्व मंत्री श्री सुरेन्द्रपाल रातावाल जी, पूर्व उपमहापौर श्रीमती पूर्णिमा विद्यार्थी जी, करोलबाग से पूर्व विधायक श्री विशेष रवि जी, पूर्व निगम पार्षद करोल बाग श्री हर्षवर्धन शर्मा जी, सुप्रसिद्ध होमियोपैथिक डाक्टर श्री अविनाष गुप्ता जी, डोरीवालान आर.डब्ल्यू.ए. के अध्यक्ष श्री कालू चड्ढा जी एवं अन्य सामाजिक संगठनों के लोगों ने हिस्सा लिया।

इस कार्यक्रम का संचालन करते हुए आर्यसमाज डोरीवाला के यशस्वी, जुझारु, कर्मठ एवं लोकप्रिय प्रधान श्री वागीश ईसर जी ने कार्यक्रम में आये सभी यजमानों का हार्दिक धन्यवाद किया।

आर्यसमाज के प्रधान श्री वागीश ईसर ने बताया कि अब आर्यसमाज डोरीवाला के निर्माण का कार्य पूर्ण हो चुका है। संस्कृत को बढ़ावा देने के लिए ऊपर के तल में निशुल्क संस्कृत शिक्षण, इसके लिये टीचर ट्रेनिंग एवं छोटे बच्चों के लिए अलग से केसेटस इत्यादि तैयार करना, इसके अलावा आर्थिक दृष्टि से कमजोर बच्चों को कम्पयूटर की ट्रेनिंग देना एवं उनके रोजगार के समाधान के प्रकल्प किये जा रहे हैं।

प्रधान जी ने आर्यसमाज के कमर्ठ मंत्री श्री वेदपाल शास्त्री जी का विशेषकर धन्यवाद किया एवं आर्यसमाज के पूर्व मंत्री श्री धर्मवीर रावत जी जो नोएडा से चारों दिन यज्ञ में आए उनका भी धन्यवाद किया। इस अवसर पर आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष श्री दिनेश मल्होत्रा जी, श्री विरेन्द्र कपूर जी, श्री आनन्द सिंघल जी, श्री बलदेव मदान जी, श्रीमती ममता नरूला जी, श्रीमती सुमन शर्मा जी, श्रीमती ब्रजेश रावत जी, श्रीमती मधु सिंघल, जी, श्रीमती सत्या देवी जी विशेष रूप से उपस्थित रही।

ऋषि का आभार है

– बाबूराम शर्मा विभाकर

राष्ट्र के लिए ही आर्य समाज है,
आओ हम जानें उसके इतिहास को।
राष्ट्र की अस्मिता जिसने जगाई है,
वैदिक संस्कृति की अलख ही जगाई है।
महर्षि दयानन्द नाम सदा अमर है,
जिसकी अनुकम्पा से भारतीयता जागी है।
जिनके संदेश से अज्ञानता भागी है,
खोले गये गुरुकुलों में विद्या अनुरागी है।
मिट गया कुहासा फिर विगत सहस्र वर्षों का,
हो गया परिवर्तन वैदिक विचारधारा का।
युवाशक्ति कर रही उसका ही अभिनन्दन,
स्वतन्त्रता प्राप्ति में जिसका सहयोग है।
सोते से जाग गये भारत के तंत्र सब,
ऋषि ने देखो वे फूंक दिये मंत्र सब।
वेदों की ओर ही तो लौटना स्वीकार है,
ईश्वरीय वाणी का हमें अंगीकार है।
वन्दना करें हम ईश की नित-नित,
ऋषि का आभार है।

– 52/2, लाल क्वाटर्स, गाजियाबाद (उ. प्र.)

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 21–22 नवम्बर, 2014
प्रकाशन की तिथि : 20 नवम्बर, 2014
वैदिक सार्वदेशिक
20 से 26 नवम्बर, 2014
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

प्रतिष्ठा में :

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रकृति माता का अद्भुत चमत्कार

एकः सुपर्णः स समुद्रमा विवेश स इदं विश्वं भुवनं वि चष्टे।
तं पाकेन मनसापश्यमन्तितस्तं माता रेहि स उ रेमातरम्।।

—ऋ० १०/११४/४

ऋषिः—सध्रिवैरूपो घर्मो वा तापसः।। देवता—विश्वेदेवाः।। छन्दः—जगती।।

विनय—संसार में आया हुआ जीव क्या है?यह एक सुपर्ण पक्षी है जो अन्तरिक्ष-समुद्र में विहार करने आया हुआ है। यह अपने ज्ञान और कर्म के पंखों से इधर-उधर उड़ता हुआ इस सब भुवन को विविध प्रकार से देखने का आनन्द ले-रहा है। संसार-सागर में मनोमयादि सूक्ष्म संसारान्तरिक्ष में एक योनि से दूसरी योनि में भोग भोगने के लिए फिरता हुआ और वहां विविध प्रकार के भगों को प्राप्त करता हुआ यह जीव गति कर रहा है, उड़ रहा है। अभी तक जीव को मैं इसी संसाराकाश के विकारी सुपर्ण के रूप में देखता रहा हूँ, पर आज समीपता से देखा है, ज्ञानपरिपक्व हुए मन से इसे समीपता से देख रहा हूँ, तो इस जीव-प्रकृति-संयोग को मैं और ही रूप में देख रहा हूँ कि माता उसे चूम रही है और वह माता को चाट रहा है। प्राकृति माता मैं कहूंगा परमेश्वरी प्रकृति-जीव से प्रेम कर रही है और जीव इस माता से सुख पा रहा है। जीव के प्रकृति से जुड़ने का, जीव के संसार में आने का यही रहस्य है। कई ऋषि कहते हैं कि जीव और प्रकृति का संयोग लूले और अन्धे का संयोग है, पर यह बात शायद परमेश्वरहीन प्रकृति के विषय में होगी। परमेश्वरी प्रकृति तो अन्धी नहीं है। मुझे तो यह सम्बन्ध माता और पुत्र का लगता है। इसलिए यह सम्बन्ध केवल भोग में नहीं किन्तु अपवर्ग में (अपवर्ग के भोग में) भी बना रहता है। पुत्र माता के बिना नहीं रह सकता और माता पुत्र को चाहती है। ऋषि ने ठीक कहा है "पृथिवी सब भूतों को मधु है और सब भूत पृथिवी को मधु हैं।" वास्तव में दोनों एक-दूसरे से सुख पा रहे हैं और एक-दूसरे को सुख दे रहे हैं। क्या हम ही प्रकृति से सुख पाते हैं और प्रकृति हमसे सुख नहीं पाती?नहीं। तनिक प्रकृति को बेजान मत समझो, प्रकृति को "परमेश्वर की प्रकृति" के रूप में देखो।

शब्दार्थ—एकः सुपर्णः=एक सुपर्ण पक्षी है सः=वह समुद्रम्=इस संसारान्तरिक्ष के समुद्र में आविवेश=आया है सः=वह इदं विश्वं भुवनम्=इस सम्पूर्ण संसार को विचष्टे=विविध प्रकार से देखता है, इसका मज़ा लेता है, परन्तु तम्=उसे पाकेन मनसा=परिपक्व ज्ञानवाले मन से अन्तितः=समीपता से अपश्यम्=देखा है तो मैं देखता हूँ कि तम्=उसे माता=माता रेहि=चूम रही है सः उ=और वह मातरम्=माता को रेहि=चाट रहा है।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

फेसबुक : Swami Aryavesh
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

20 नवम्बर, 2014 तक अग्रिम राशि भेजने वालों को दिया जायेगा

मात्र 2100/- रुपये में एक सैट

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। **डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा।** प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।